गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में आधुनिक स्त्री-मुक्तिबोध

कंचन रजक

(शोधार्थी)

विश्वविद्यालय हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

शोधसार :–

समकालीन कथा साहित्य की प्रमुख लेखिकाओं में गीतांजलि श्री का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। उपन्यास और कहानी के माध्यम से उन्होंने हिंदी कथा साहित्य को नई वैचारिक दिशा प्रदान की। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में स्त्री जीवन, स्मृति, विभाजन, परिवार, मानवीय संबंधों तथा सामाजिक यथार्थ को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। गीतांजलि श्री की रचनाओं में स्त्री पात्र एवं परिवेश युग प्रभाव से बदलता रहता है। उनके कथा साहित्य की स्त्री उत्तर आधुनिकता और पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित होती दिखती है। गीतांजलि श्री की प्रमुख रचनाएं माई, हमारा शहर उस बरस, तिरोहित, खाली जगह, बेलपत्र, प्राइवेट लाइफ और रेत-समाधि आदी हैं। उनका उपन्यास रेत समाधि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हुआ और इसके अंग्रेज़ी अनुवाद Tomb of Sand को वर्ष 2022 में International Booker Prize 2022 प्राप्त हुआ।

बीच शब्द- स्त्री-विमर्श, अस्मिता, प्रतिरोध, मानवीय संवेदना, स्मृति।

प्रस्तावना :–

गीतांजलि श्री की रचनाओं में स्त्रियों का संघर्ष समय, स्थान और समाज के अनुसार बदलता दिखाई देता है। उनकी स्त्रियाँ केवल पारिवारिक बंधनों से ही नहीं जूझतीं, बल्कि सामाजिक रुढ़ियों, पहचान के संकट, स्मृति, अकेलेपन और स्वतंत्र अस्तित्व की खोज से भी संघर्ष करती हैं। पीढ़ियों के बीच के वैचारिक मतभेद, विभाजन की त्रासदी, बदलते पारिवारिक संबंध तथा आधुनिक जीवन की जटिलताएँ उनके स्त्री पात्रों के अनुभवों को अलग-अलग रूप देती हैं। कथा में माई उपनय से लेकर रेत समाधि में स्त्री अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में भी नई पहचान और स्वतंत्रता की तलाश करती है। इस प्रकार गीतांजलि श्री स्त्री संघर्ष को एक स्थिर नहीं, बल्कि बदलती सामाजिक परिस्थितियों के साथ विकसित होने वाले प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत होती है।

गीतांजलि श्री का उपन्यास 'माई' माई के जीवन के यथार्थ परिस्थिति को उजागर करते हैं। माई उपन्यास में तीन पीढ़ियों की स्त्री की मनोवृत्ति, उनका जीवन, पारिवारिक स्थितियों को उजागर किया है। दादी, माई और माई की बेटी सुनैना। उपन्यास की प्रधान स्त्री माई है। माई का चरित्र उदात्त और उदार है। सुनैना तीसरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। सुनैना अंग्रेजी ग्रहण कर विदेश यात्रा भी की हुई है। माई के लिए ड्योढ़ी

(दहलीज) ही उनका संसार है। माई हमेशा चुप रहती है। माई आज के भारतीय परिवार की उस स्त्री की भूमिका निभा रही हैं जो दिन-रात अन्य सदस्यों की इच्छा को पूर्ति करने में लगी रहती है। माई के जीवन में बिखराव था इसका प्रमुख कारण पिताजी के अन्य औरत के साथ संबंध रखना। सुनैना पिताजी के विरोध करना चाहती थी लेकिन माई चुप ही रहना चाहती थी। माई की अपनी इच्छा और आकांक्षाओं कुछ भी नहीं थी। सुनैना माई को ड्योढ़ी से बाहर निकल कर दुनिया की सरे करना चाहती है। माई खुद में कोई भी बदलाव नहीं लाना चाहती है। माई सुनैना से कहती "**तुमसे तो नहीं कहते हमारे जैसे बनो, तुम क्या जबरदस्ती हमें बदलना चाहते हो? हमारी दीवार रेट की मिति पर खड़ी होगी, खुद ही टूट जाएगी, तुम क्यों लात जमाते हो**"[1] माई ड्योढ़ी में अपने आप को कैद कर ली थी यहां तक कि माई अपने मायका के परिवार से भी कोई संबंध नहीं रखती है। ससुर, सांस, और पति की इच्छाओं और आदेशों को ही अपना मुख्य कार्य समझती है। सुनैना चाहती है कि मां की स्वयं की कोई इच्छा हो और वह स्वतंत्र होकर अपनी जीवन को जी सके। लेकिन मां यह नहीं चाहती। इसलिए सुनैना माई की तरह नहीं बनना चाहती है। कहती है "**मुझे माई नहीं बनना, मैं माई वैसे भी नहीं बनूंगी, माई खुद मुझे माई नहीं बनती, मैं चाहूं तो भी माई नहीं बन सकती, वह सिफ़त नहीं मुझमें**"[2] वहीं दूसरी तरफ सुनैना आज की आधुनिक विचारों को लेकर सब कुछ बदलना चाहती है। माई का अनुकरण नहीं करना चाहती। वह चाहती है हर स्त्री की अपनी अलग पहचान हो। उसकी अपनी इच्छा हो। स्वतंत्र होकर अपनी अस्मिता के लिए आवाज़ उठायें। माई परंपरागत विचारधारा रखते हुए आज की मध्यवर्गीय परिवार की वह स्त्री की प्रतिनिधत्व करती है जो खुद को बदलना नहीं चाहती लेकिन अपनी बेटी को नये जमाने में ढलने के लिए प्रेरित करती है।।

माई की तरह चच्चों भी अपने जीवन की त्रासदी को अनुभव करती है लेकिन चच्चों माई से एक कदम आगे बढ़ कर अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करती है। चच्चों "तिरोहित" उपन्यास की मुख्य स्त्री पात्र है। चाचा हांगकांग में नौकरी करते हैं पढ़े लिखे फिर भी चच्चों को घर के चार दिवारी में रखते है। चच्चों को छत पर भी जाने की अनुमति नहीं है। "**चच्चों को वह कहते फालतू में ऊपर मत जाना समय की बर्बादी** है।"[3] चच्चों अपनी दम्पति जीवन से भी असन्तोष रहती है। अपने पति से ओम बाबू से प्रेम चाहती है-**"वह चाचा को छू रही है। दर्प से। उन्हें खींच रही है। उन्हें दबोच रही है। चाचा मानो सो रहे हैं। अब जाग रहे हैं, छोड़ रहे हैं, इनकार कर रहे हैं, उनके साथ झटक रहे हैं, कह रहे हैं मुझे औरत चाहिए तुम नहीं"**[4] चच्चों को पति से दुराचार मिलने पर भी पति के कोमा के बीमारी पे रात दिन पति की सेवा करती है। चच्चों आज की वह स्त्री है जी अपने पति को परमेश्वर के रुप में देखती है चाहे पति उसके साथ कितना भी दुराचार करें। चच्चों की तरह ललना भी अपने पति के द्वारा किसी अन्य पुरुष के पास पहुंचाई गयी "**वह ससुर नहीं ललन ही था जो उसे छोड़ने आया कि इससे छुटकारा पा अपनी नई नवेली, दूसरी दुलहिन के पास उड़ पहुंचे**"[5] चच्चों और ललना दोनी की दाम्पत्य जीवन के असफलताओं को दिखता है। दोनों स्त्री की घुटन, आत्मपीड़न, त्याग जीवन के दर्द को यथांध के रुप हमारे सामने प्रस्तुत होता दिखाई देता है। अंत में ललना

और चच्चों दांपत्य जीवन के परांपरागत समाजिक व्यवस्था को तोड़कर एक-दूसरे का सहारा बनती है। गीतांजलि श्री ललना और चच्चों के माध्यम से समलैंगिक संबंधों को उजागर करती है। तिरोहित उपन्यास समलैंगिक संबंधों को रेखांकित करते हुए वरिष्ठ आलोचक वीरेंद्र यादव लिखते हैं कि **"तिरोहित के पृष्ठों पर जिस शांत, थिर मुहावरें में अनावृत्त होती है उसकी अपनी एक अलग लाय है। पुरुष-सत्ता का प्रतिपक्ष रचती यह 'नई औरत' न तो पश्चिमी 'फेमिनिज्म' का अनुकरण करती है और न ही वह नारीवाद के किसी स्वीकृत सांचे में ढली है। घर, परिवार और समाज के पाखंडी मुखौटे को बेपर्दा होने की प्रक्रिया स उपजा 'परस्परिक अवलंबन' जिस 'लेस्बियन कंटिन्यूम' को रचता है, वह पुरुष सत्ता का 'ध्वस्तीकरण' (सबवर्जन) है।"**[6]

'हमारा शहर उस बरस' में सांप्रदायिकता और धार्मिक कट्टरवाद के विमर्श को भिन्न धरातल पर प्रस्तुत करता है। इस साम्प्रदायिक वैमनस्य के चलते अंतरधार्मिक विवाह में स्त्री के संघर्षों को दिखाया गया। कैसे सम्प्रदायिक दंगों में हनीफ और श्रुति के संबंधों को समाप्त करने को कोशिश की जाती है। श्रुति को अपने दाम्पत्य जीवन को बचाने के लिए रूढ़िग्रस्त सामाजिक परिस्थितियों से संघर्ष करना पड़ता है। लेखिका कहती है **"औरत को हर बार लड़ना पड़ता है ती विकृत करार दी जाती है। औरत को हर कुछ पाने के लिए चिल्लाना पड़ता है। आदमी हर कुछ गंवाने पर चिल्लाता है।"**[7] यहां साम्प्रदायिक वैमनस्य के जहर से दोनों के अंतर्मन में शंका और अविश्वास पैदा किय जाता है। श्रुति का संघर्ष केवल अपने दाम्पत्य जीवन को बचाने का संघर्ष नहीं है, बल्कि वह सांप्रदायिकता और पितृसत्तात्मक सोच के विरुद्ध एक स्त्री की मानवीय चेतना का संघर्ष भी है। स्त्री-विमर्श के संदर्भ में देखा जाए तो श्रुति अपने संबंधों को धर्म, जाति और सामाजिक पूर्वाग्रहों से ऊपर रखती है। जब समाज हिंदू–मुस्लिम पहचान के आधार पर रिश्तों को तोड़ने का प्रयास करता है, तब श्रुति अपने प्रेम, विश्वास और मानवीय संबंधों को बचाने के लिए संघर्ष करती है। वहीं दूसरी तरफ एक स्त्री दूसरी स्त्री के अत्याचार में भी सहभागी होती हुई दिखाई देती है **"औरतें अपनी बहू को जलाती हैं फिर खड़े-खड़े तमाशा देखती हैं। जिंदा जलती हैं।"**[8] यहां समाज की रूढ़ीगत परंपरा का चित्रण है विवाह में दहेज न मिलने पर अपने ही बहूं के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। इस उपन्यास में धर्म, संस्कृति और परंपराओं में जकड़ी स्त्री के संघर्ष को गहराई से चित्रित किया गया है।

"खाली जगह' उपन्यास में विश्वविद्यालय के परिसर में बम विस्फोट होने से रोजमर्रा की जिंदगी को प्रभावित करती हुई घटनाओं को दिखाया गया है। जिसके कारण मां की ममता और वात्सल्य प्रेम भी विस्फोट में मारा जाता है। मां की अठारह साल के पुत्र की मौत हो जाता है लेकिन विस्फोट से मिले असफलता में नियति ने मां के ममता और प्रेम को तीन वर्ष का बच्चा देता है। "**मां के हाथ दुआ देते हैं, सहलाते हैं। सहलाते हैं, दुआ फैलाते हैं।"**[9] मां अनाथ तीन वर्ष के बच्चे को अपने अठारह साल के पुत्र के समान ही प्रेम और वात्सल्य से बड़ा करती है। इसमें मां के ममता, त्याग और वात्सल्य प्रेम को देख सकते हैं। उपन्यास में मां का चरित्र लेखिका ने बहुत ही मनोयोग से चित्रित किया है। मां के वात्सल्य प्रेम और

अनुभव को लेखिका लिखती है कि **"मां की जरूरत हमेशा मां पहचानती है। कौन सा बटन कि कमीज पर सिया था मां जानती है, पिता नहीं।"**[10] मां अपने बच्चों को हर परिस्थिति में पहचान लेती है। इसलिए जब बम फटने के बाद बेटे को पहचानने का संकट उपस्थित हुआ तब मां ही तो थी जिसने अपने मृत बेटे का पहचान कर पाती है। लेखिका इस बम दुर्घटना में मां के ममता की विवशता को रेखांकित करती है। जहां लेखिका लिखती है कि **"तब वह अपनी दोनों बाहें फैलाकर डब्बे पर बिछा देती है और चेहरा उसमें गडा देती है। दोनों बेटों को अपने आगोश में लिये। मां की हथेलियां धरती को ढक रही है की बस और मुझे कुछ नहीं चाहिए।"**[11] प्रस्तुत कथन से यह स्पष्ट होता है की मां की दुनिया उसके बेटों के इर्द-गिर्द ही है। मृत और गोद लिया हुआ बेटा ही अब उसका संसार है। दोनों को अपने वात्सल्य प्रेम में समेटना चाहती है। उपन्यास में कई जगह स्त्री की ममतामयी रुप की मौन संघर्ष और वेदना को गहराई के साथ उपस्थित हैं।

'रेत- समाधि' उपन्यास एक महागाथा है। जिसमें हर साधारण स्त्री में छपी एक असाधारण स्त्री की महागाथा है। जिससे अस्सी वर्ष की वृद्ध विधवा औरत की कहानी है। मां अवसाद और उब से बाहर निकलते हुए तितली, चींटी, तीतर, सूरज की रोशनी, छड़ी में अपनी नई जिंदगी खोजने लगती हैं। जो वर्तमान को भूल कर अपने अतीत से मिलना चाहती है। मां चंद्रप्रभा देवी बिना वीजा के ही वह पाकिस्तान पहुंच जाती है। विभाजन के समय अलग हो गए अपने पुराने शौहर प्रेमी अनवर से मिलने के लिए। मां देश के विभाजन को स्वीकार नहीं करती। मां के लिए सरहद इंसानों ने अपने स्वार्थ के लिए बनाए हैं। मां कहती है- **"बॉर्डर इश्क है। इश्क जेल नहीं बनाता, हर रोक लाघंने के लिए सितारे बिछाता हैं। बॉर्डर मिलन की रेखा है। इधर और उधर के जोड़ को अलग बगल लाकर खुशनुमा बनाने को। दोनों की मुल्क के लिए होता है। दोनों की मुलाकात के लिए होता है। संगम।"**[12] यहां अस्सी साल की मां के स्वछंद विचारों का पता चलता है। मां रुढ़ीगत सामाजिक नियमों को तोड़कर अपनी इच्छा को पूरा करती है।

उपन्यास में मां और बेटी के मधुर संबंधों को भी देख सकते हैं। बेटी ने मां बनकर मां को बेटी बनाया है। बेटी अपने प्रेमी को छोड़ मां के लिए मां के साथ पकिस्तान चली आती है। लेकिन मां के बदलते व्यवहार से परेशान भी होती हैं। बेटी कहती है **"बुढ़ापे में बच्चा हो जाना तो सुना है। मगर खुद को युवा समझने लगना? कितना भोंडा लगता है।"**[13] रेत समाधि की अस्सी वर्षीया वृद्ध स्त्री पारंपरिक सीमाओं और सामाजिक रूढ़ियों को पीछे छोड़कर जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने का साहस करती है। वह यह स्थापित करती है कि मनुष्य की इच्छाओं, स्वतंत्रता और आत्म-पहचान पर उम्र का कोई बंधन नहीं होता। उपन्यास की 'मां' केवल एक वृद्ध स्त्री का चरित्र नहीं, बल्कि उन स्त्रियों का प्रतीक है, जिन्होंने जीवनभर समाज, परिवार और परंपराओं के दबाव में अपनी इच्छाओं को दबाकर रखा।

गीतांजलि श्री अपनी कहानियों में भी स्त्री जगत के छोटे-छोटे पहलुओं के द्वारा उनकी गंभीरता, संघर्ष तथा अंतर्मन के द्वंर्दो को चित्रित करती है। गीतांजलि श्री अपने स्त्री पात्र को कोई परंपरा में न बांध कर उसे आज

के आधुनिक संदर्भ में चित्रित करती है। 'प्राइवेट लाइफ' कहानी की स्त्री पात्र शिक्षित और ट्रांसलेटर की नौकरी करती है। वह घर परिवार के बंधनों से मुक्त होकर अपना आजाद जीवन जीना चाहती है। इसीलिए वह घर से दूर किराए के मकान में रहने लगती है। लेकिन उसके चाचा को यह पसंद नहीं आता है चाचा उसे कहते हैं **"हमारे समाज में लड़की हमेशा किसी की निगरानी में रहती है। पहले आप फिर पति फिर बेटा उसकी देखभाल करता है।"**[14] आज भी समाज में पढ़ी-लिखी और अपने पैरों पर खड़ी स्त्री को पूरी स्वतंत्रता से स्वीकार नहीं किया जाता। यदि कोई स्त्री अकेले रहकर अपना जीवन अपने अनुसार जीना चाहती है, तो समाज उसकी जीवन-शैली, चरित्र और निर्णयों पर प्रश्नचिह्न लगाने लगता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री को आज भी परिवार और पुरुष के संरक्षण में देखने की अभ्यस्त है, इसलिए आत्मनिर्भर और अकेली स्त्री समाज को असहज करती है। कहानी में नायिका पितृसत्तात्मक व्यवस्था को तोड़ती है। अपने अपने अधिकार के अस्तित्व की रक्षा भी करती है।

'दिशाशूल' कहानी में आपला एक लेखिका है जो नारीवाद विषय को लेकर लिखती है। नारी जीवन की त्रासदी को वह अपनी लेखनी में में उजागर करती है। पुरुष-सत्तात्मक द्वारा उसकी लेखनी को नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है। नायिका को प्रकाशक द्वारा पत्र में लिखा हुआ मिलता है *"***नारी होने का फ़ायदा पा रही हो, वरना छिछली लिखाई है, बुर्जुआ प्रणाली को बल देती। तुम सोच समझ कर भेजा करो कुछ छापने..."।**[15] रुढ़िवादी समाजिक सोच स्त्री को आगे बढ़ने से रोकता है। चाहे वह स्त्री कितना भी काबिल क्यूं न हो। हमारा समाज उसे हमेशा घर के चार दिवारी में कैद कर रखना चाहता है। पढ़ी लिखी स्त्री की आधुनिक विचार रुढ़िवादी विचारों के सामने कमजोर सा प्रतीत होता है।

निष्कर्ष :–

गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में स्त्री पात्र अपने जीवन के संघर्ष से लड़ते हैं, लेकिन हार नहीं मानते। अपने जीवन को नए अर्थ देने के प्रयास में निरंतर संघर्ष करती हैं और नई चेतना से सृजित होकर अपने लक्ष्य को पा लेती है। गीतांजलि श्री की स्त्रियाँ परंपरागत मान्यताओं, पितृसत्तात्मक व्यवस्था और सामाजिक दबावों से संघर्ष करते हुए अपनी अलग पहचान बनाने का प्रयास करती हैं। पात्रों की स्त्रियां अन्य स्त्री के लिए भी आत्मविश्वास और जीवन के प्रति नई दृष्टिकोण विकसित करती है। इस प्रकार गीतांजलि श्री के रचनाओं में स्त्री पात्र संघर्ष, आत्म-अन्वेषण और स्वतंत्र अस्तित्व की सशक्त अभिव्यक्ति बनकर उभरते हैं। गीतांजलि श्री के कथा साहित्य की स्त्रियों में आत्मचेतना, स्वतंत्रता और अपने अस्तित्व को पहचानने की गहरी आकांक्षा दिखाई देती है। ये स्त्रियाँ केवल पीड़ा सहने वाली पात्र नहीं हैं, बल्कि अपने जीवन को नए अर्थ देने और स्वयं को पुनः निर्मित करने का साहस भी रखती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. श्री गीतांजलि, माई, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, पृ. 102,103
2. वही, पृ. 167
3. श्री गीतांजलि, तिरोहित, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, पृ. 38
4. वही, पृ. 72,73
5. वही, पृ. 11
6. सं. नामवर सिंह, आधुनिक हिंदी उपन्यास भाग 2, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, पृ. 22,23
7. श्री गीतांजलि, हमारा शहर उस बरस, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, पृ. 111
8. वही, पृ. 110
9. श्री गीतांजलि, खाली जगह, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, पृ. 119
10. वही, पृ. 24
11. वही, पृ. 33
12. श्री गीतांजलि, रेत-समाधि, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, पृ. 333
13. वही, पृ. 341
14. श्री गीतांजलि, प्राइवेट लाइफ(अनुगूंज कहानी संग्रह), राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, पृ. 13
15. श्री गीतांजलि, दिशाशूल (वैराग्य कहानी संग्रह), राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, पृ. 29